।। ओ३म्।।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

अग्निना रयिमनश्वत् पोषमेव दिवेदिवे । यशसं वीरवत्तमम् ।। ऋ. 1/1/3।।

ईश्वर की उपासना और भौतिक अग्नि को विविध कला–यन्त्रों में प्रयोग कर सभी आध्यात्मिक एवं भौतिक ऐश्वर्यों को प्राप्त करो, जो प्रतिदिन वृद्धि को प्राप्त होयें और तुम्हें यश एवं सूरवीरता को देने वाले हों।

वर्ष 36, अंक 12 एक प्रति : 5 रुपये

सोमवार 28 जनवरी, 2013 से 03 फरवरी, 2013

विक्रमी सम्वत् 2069 दयानन्दाब्द : 188

सृष्टि सम्वत् 1960853113 वार्षिक : 250 रुपये

फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com

Website:www.aryamahasammelan.com पृष्ठ 1 से 8 तक

सार्वदेशिक सभा एवं विचार चैनल के तत्वावधान में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के सहयोग से

प्रयाग कुम्भ में बज रहा है वैदिक धर्म का डंका

साहित्य और चलचित्र के माध्यम से हो रहा हैं आर्य समाज और वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार

महाकुम्भ प्रयाग में हुआ वैदिक धर्म प्रचार शिविर और चलचित्र शिविर का भव्य उद्घाटन

वैदिक धर्म प्रचार और चलचित्र शिविर का महाशय धर्मपालजी ने किया उद्घाटन

शोभा यात्रा में प्रयाग क्षेत्र की सभी आर्य समाजों के आर्य बन्धुओं और शिक्षण संस्थाओं के बच्चों सहित देश-विदेश के अनेक आर्य महानुभाव हुए सम्मिलित

प्रचार शिविर के उद्घाटन के अवसर पर सार्व. सभा के प्रधान आचार्य बलदेवजी, महाशय धर्मपालजी, उ.प्र. सभा के प्रधान श्री देवेन्द्रपाल वर्मा, दिल्ली सभा के प्रधान ब्र. राजसिंह आर्य, महामन्त्री विनय आर्य, अमेरिका आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डॉ.रमेश गुप्त सहित अनेक गणमान्य लोग उपस्थित थे

वैदिक धर्म प्रचार शिविर में आर्य जगत् के वरिष्ठ नेताओं, समाजसेवियों और विद्वानों का स्वागत करते हुए समाजसेवी श्री गौरी शंकर श्रीवास्तवजी

दीप प्रज्वलित करते महाशय धर्मपालजी साथ में सहयोग करते शिविर संचालक पं.सन्तोष शास्त्री, श्री हीरालाल शर्मा व प्रमोद आर्यजी

महाकुम्भ :मूल मन्तव्य,दशा और दिशा

कुम्भ का मूल अर्थ घट या घड़ा होता है। लेकिन इसका और भी कई सन्दर्भों और प्रसंगों में प्रयोग किया जाता है। कुम्भ के पौराणिक सन्दर्भ के बारे में अधिकांश लोग जानते हैं लेकिन इसके आयोजन के सम्बन्ध में किसी को सही जानकारी नहीं है, कि यह कब से और क्यों आयोजित होता आ रहा है। यदि पौराणिक मेले के रूप में इसे इंगित करें तो इसकी उतनी महत्ता नहीं है जितनी कि इसके सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक दृष्टिकोण से । विश्व में नदियों के किनारे कई बड़े मेले लगते हैं, जिनमें

– शेष पृष्ठ 3 पर....

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट,नई दिल्ली के सहयोग से

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला – 2013 प्रगति मैदान में

वैदिक साहित्य प्रचार-प्रसार

सोमवार , 4 फरवरी 2013 से रविवार, 10 फरवरी 2013 तक

हॉल संख्या एच - 12 , स्टॉल संख्या : बी 309 - 310,

उद्घाटन 4 फरवरी प्रातः 11 बजे

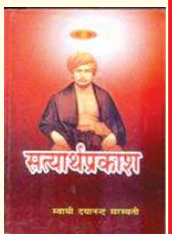

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी नई दिल्ली के प्रगति मैदान में आयोजित होने वाले 21 वें विश्व पुस्तक मेले में वेद,आर्यसमाज,महर्षि दयानन्द तथा वैदिक धर्म से सम्बन्धित समस्त साहित्य के प्रचारार्थ स्टाल बुक कराया है। आर्यजनों से निवेदन है कि अधिकाधिक संख्या में स्टाल पर पधारकर तथा अन्य लोगों को स्टाल पर पधारने की प्रेरणा करके कार्यकर्ताओं का उत्साहवर्धन करें तथा साहित्य प्रचार कार्य में सहयोगी बनें।

वेद-स्वाध्याय

मूर्धन्य संन्यासी को व्यासपीठ : समाज और आत्म दर्शन का नाभिक

- स्वामी देवव्रत सरस्वती

ब्रह्मा देवानां पदवीः कवीनामृषिर्विप्राणां महिषो मृगाणाम्। श्येनो गृध्राणां स्वधितिर्वनानां सोमः पवित्रमत्येति रेभन्।। ऋ. 9।96।6।।

अर्थ–(ब्रह्मा देवानाम्) (निर्धारणे षष्ठी) विद्वानों में चतुर्वेद विद् ब्रह्मा (पदवीः कवीनाम्) कवियों, क्रान्तदर्शी विद्वानों में आदर्श (ऋषिर्विप्राणाम्) विप्र, मेधावी लोगों में ऋषि (महिषोमृगाणाम्) पशुओं में सिंह तुल्य (श्येनो गृध्राणाम्) पक्षियों में बाज के तुल्य पराक्रमी (स्वधितिर्वनानाम्) अज्ञानान्धकार का समूलोच्छेदन करते में कठोर रूप (सोमः) सौम्य स्वरूप, यह (रेभन्) उपदेशामृत की वर्षा करता हुआ (पवित्रमत्येति) सर्वोच्च पद, व्यासपीठ पर आरुढ़ होता है।

इस मन्त्र में यद्यपि संन्यास आश्रमी का स्पष्ट उल्लेख नहीं है। मन्त्रोक्त सारी क्षमताओं का केन्द्र सोम है। औषधि वाले सोम में उपरोक्त क्षमतायें घटित नहीं होती। अब सोम शब्द से अभिप्रेत ईश्वर, राजा, विद्वान् इन तीनों में विद्वान् का ही सोम शब्द से ग्रहण किया जाना उचित है। क्योंकि राजा के गुण शासन, प्रबन्ध, शूरवीरता आदि हैं और ईश्वर के लिये मन्त्र में कहीं क्षमतायें न्यून ठहरती हैं सो विद्वान् सोम में ही इन गुणों की सम्भावनायें दिखाई देने से उसी का ग्रहण करना उचित होगा।

संन्यास ग्रहण करना ब्रह्मण का ही धर्म है अथवा क्षत्रियादि का भी? इस प्रश्न के उत्तर में महर्षि दयानन्द जी सत्यार्थ प्रकाश के पञ्चम समुल्लास में लिखते हैं–ब्राह्मण को ही अधिकार है। क्योंकि जो सब वर्णों में पूर्ण विद्वान् धार्मिक, परोपकार–प्रिय मनुष्य हैं उसी का ब्राह्मण नाम है। बिना पूर्ण विद्या, धर्म, परमेश्वर की निष्ठा और वैराग्य के संन्यास ग्रहण करने में संसार का विशेष उपकार नहीं हो सकता।

आगे प्रश्न किया है–अध्यापन और उपदेश गृहस्थ किया करते हैं, पुनः संन्यासी का क्या प्रयोजन है?

उत्तर– सत्योपदेश सब आश्रमी करें और सुनें, परन्तु जितना अवकाश और निष्पक्षपातता संन्यासी को होती है, उतनी गृहस्थों को नहीं..... जब ब्राह्मण वेद विरुद्ध आचरण करें तब उनका नियन्ता संन्यासी ही होता है। जैसे सम्राट सर्वोपरि चक्रवर्ती राजा होता है, वैसे ही परिव्राट् संन्यासी होता है।

संन्यास आश्रम की योग्यता एवं आवश्यकता जान लेने के पश्चात् मन्त्र में जो गुण संन्यासी के बतलाये हैं उन पर विचार करने में सुविधा रहेगी।

1. **ब्रह्मा देवानाम्** देव विद्वान् को कहते हैं। **विद्वान्सो हि देवाः** (शतपथ) जो चारों वेदों का विद्वान् हो, वह ब्रह्मा होता है। चारों वेदों का विद्वान् होना अपने आप में बहुत बड़ी योग्यता है। वेद–शास्त्रों का मर्मज्ञ विद्वान् ही धर्माधर्म का सही निर्णय कर सकता है। यज्ञों में जिसे ब्रह्मा बनाया जाता है वहाँ पर भी सब से योग्य व्यक्ति का चयन कर उसे सर्वोच्च आसन दिया जाता है और यज्ञ का समस्त क्रिया–कलाप उसी की देख–रेख में होता है। जैसे किसी कल–कारखाने का सबसे बड़ा प्रबन्धक (मैनेजर) उसी को बनाया जाता है जिसे सभी कल–पुर्जों एवं अन्य प्रबन्ध व्यवस्था के सञ्चालन का अनुभव हो, ठीक यही कार्य ब्रह्मा का होता है। वह स्वयं कोई क्रिया न कर दूसरे ऋत्विजों से कराता है।

2. **पदवीः कवीनाम्** कवि क्रान्तिदर्शी को कहते हैं। 'जहाँ न पहुँचे रवि वहाँ पहुँचे कवि' यह लोकोक्ति सत्य पर आधारित है। मानव कल्याण, ईश्वर, धर्म एवं राष्ट्र की उन्नति सम्बन्धी सारी योजनायें उसके मस्तिष्क में रहने से ही संन्यासी कवियों अर्थात् राष्ट्र निर्माण में लगे विद्वानों में मूर्धन्य होने से उसे पदवीः अर्थात् सर्वोत्तम् पद प्राप्त कहा है। जहाँ गृहस्थ सम्बन्धी प्रपञ्च होने से अन्य लोग अपने हितों की रक्षा हेतु प्रयत्नशील रहते हैं वहाँ इन झंझटों से दूर संन्यासी सबके हित की बात को प्राथमिकता देता है।

3. **ऋषिर्विप्राणाम्** ऋग्वेद 10.26.5 में **ऋषिः स यो मनुर्हितः** जो मानव मात्र का हित चिन्तक, **विप्रस्य यावयत् सखः** विप्रों का मित्र तथा यज्ञादि की सभी विद्याओं का ज्ञाता हो उसे ऋषि बतलाया है। इससे यह बात भी निरस्त हो जाती है कि संन्यासी को यज्ञ कराने का अधिकार नहीं है। परन्तु उसका मुख्य कार्य ईश्वर चिन्तन और वेद प्रचार करना है।

4. **महिषो मृगाणाम्** महिष शब्द यहाँ भैंसे का वाचक न होकर महान् अर्थ वाला है। पशुओं में सिंह के समान संन्यासी निर्भीक हो सर्वत्र वेद प्रचार करे और किसी से भयभीत न हो।

5. **श्येनो गृध्राणाम्** इन्द्रियाँ विषयों की लिप्सा और लालच वाली हैं। इसलिये इन्हें गृध्र (गीध) कहा है जैसे गिद्ध मृतक पशु की तलाश में रहते हैं वैसे ही श्येन पक्षी के समान संन्यासी विषयों में आसक्त इन्द्रियों को वहाँ से हटा लेता है। इसी कारण उसे श्येन की उपमा दी गई है।

6. **स्वधितिर्वनानाम्**–वनों को काटने में कुठार के समान विषयों में आसक्त इन्द्रियों को वन और उन्हें क्षीण या निरस्त करने में संन्यासी को स्वधिति या कुठार कहा है।

7. **सोमः पवित्रमत्येति रेभन्** संन्यासी का मुख्य कार्य उपदेश करना है। इसलिये भिक्षाटन और भ्रमण उसकी दिनचर्या के आवश्यक अंग हैं। इसके पीछे यही लक्ष्य है कि उसके उपदेशामृत का सभी लोग पान कर सकें। एक स्थान पर रहने से उतना लाभ नहीं मिल सकता। जहाँ आचार्य को **कूपवृत्ति** अर्थात् जैसे कुआ एक स्थान पर रहकर लोगों की प्यास बुझाता है वहाँ संन्यासी **पर्जन्यवृत्ति** मेघ के सदृश सर्वत्र ज्ञान की वर्षा कर सबको आल्हादित करता है।

इन्हीं विशेषताओं के कारण वह पवित्रमत्येति सर्वोच्च सम्मान के पद पर बिठाया गया है। ऐसे त्यागी, तपस्वी, विद्वान् संन्यासी का सम्मान करना उचित भी है यद्यपि वह स्वयं सम्मान की कभी इच्छा भी नहीं करता। (**लेखक सार्वदेशिक आर्य वीरदल के प्रधान , आर्य संन्यासी और प्रसिद्ध योगाचार्य हैं**)

महर्षि देव दयानन्द का कृतित्व और व्यक्तित्व : जर्मन साहित्यकार कवयित्री ए. क्रिसेटाइन एलबर्स की दृष्टि में

महर्षि देव दयानन्द के कृतित्व और व्यक्तित्व पर भारत में अनेक चिन्तकों, समाजसेवियों, साहित्यकारों और दार्शनिकों ने लेखनी चलाई है। लेकिन विदेशी विद्वानों और दार्शनिकों ने क्या लिखा और कहा है, बहुत कम लोगों को ज्ञात है। जर्मन साहित्यकार कवयित्री ए. क्रिसेटाइन एलबर्स ने महर्षि के कृतित्व और व्यक्तित्व को भावपूर्ण कविता में ढाला है। ज्ञातव्य है, महर्षि से सन्दर्भित ऐसी कविताएँ अभी तक भारत में नहीं लिखी गई, इससे इन कविताओं का महत्त्व और भी बढ़ जाता है। इसका काव्यानुवाद वेद-विचारक और नवयोग के प्रतिस्थापक डॉ. ज्ञानचन्द्रजी ने इसका काव्य भावानुवाद साहित्यपूर्ण भाषा में किया है। यह श्रद्धात्मक काव्य अत्यन्त श्रद्धा के साथ धारावाहिक रूप में दिया जा रहा है। आर्य महानुभाव इसे बहुत ही श्रद्धा और भक्तिभाव से परिपूर्ण होकर ही पढ़ें। प्रस्तुत धारावाहिक के ग्यारहवें भाग का प्रकाशित किया जा रहा है। विश्व को दिए महर्षि के अवदान से सम्बन्धित धारावाहिक के इस भाग को भी पूर्व की भाँति आप सभी भक्तिभाव एवं श्रद्धा के साथ पढ़ेंगे ऐसी आशा है-अखिलेश आर्येन्दु

SWAMI DAYANANDA SARASWATI

GURUKULS:WI JERE THE YOUNG ARE TAPGHT To CI IERIS ALL THAT WHICH ANP NOBLE

"Strenth and will power" rang his motto
And thus built be up his life work
"Arya samaj he named it,
.A Samaj where all are:welcome.
All who are sincere, and earnest
In their quest fOr--greater wisdom,
Orphans, famine-stricken outcasies,
Widows, poor and lonely wand'rers,
All are here received as equals,
In one brother-hood are blended,,"
"Do behold your :ancient culture
Know your Aryan ideals,
Live again as lived,your fathers.
Make your home a spirit centre.
Mother, father, guests, and children
Upon these look e'r as devas.

Treat your servants as your children.
If they err, be firm but gentle,
Speak in words of admonition,
Freely give unto the needy,
Who for alms come to your threshold,
Live in beauty, Vedic culture.
Thus your house will be a Temple'
He resived_the_old.ideal
Of the Vedic education
Based on union with the Godhead
On the fellowship with Nature,
Gurukula, the Aryan system,
Where both heart and brain are nurtured.

where the young are taught to cherish ,
All that which is true and noble,

Vow their lives to future service,
Look on all men as their brothers,
And give love to lower creatures,
" Those on land, in air or Water,
Live in truth and shun all evil
By the Spirit Brahmacharya.
Many now the institutions
Gurukul, of Vedic culture
Many now the faithful workers
Who in cheerful consecration
Labour in the Master's vineyard.
And that vineyard, yearly growing,
Spreadeth forth its shading branches,
Fruit and flowers o'r the many.
Thus he ever lives, DAYANANDA
In the work he has created.

हिन्दी काव्यानुवाद अगले अंक में

पृष्ठ एक का शेष महाकुम्भ :मूल मन्तव्य,..

अमेरिका में हडसन नदी, कनाडा की ओटावा, स्वीडन की स्टॉकहोम और आस्ट्रेलिया की ब्रिसबेन नदी के तट पर मेले आयोजित होते रहते हैं। लेकिन भारत में लगने वाले कुम्भ, और उनमें प्रयाग का कुम्भ कई दृष्टियों से सबसे बड़ा है। विश्व को आश्चर्य चकित कर देने वाले इस जनोत्सव के सम्बन्ध में सबसे बड़े आश्चर्य की बात तो यही है कि बिना किसी आमन्त्रण और सन्देश के करोड़ों लोग इस मेले में कैसे उचित समय पर आकर अपनी मान्यता के अनुसार इसमें सम्मिलित होते हैं। यह तो इसका सामाजिक पक्ष हुआ। इसी प्रकार से इसके अनेक पक्षों पर विचार किया जा सकता है, लेकिन कुम्भ पर चर्चा करने का हमारा सन्दर्भ इससे एकदम भिन्न है। मैं इसके सांस्कृतिक, धार्मिक और आध्यात्मिक पक्षों को उस सन्दर्भ में देखने का प्रयास कर रहा हूँ जो चिन्तन के धरातल पर हमें ला खड़ा करता है।

मूल मन्तव्य और सन्दर्भ–विमर्श

पौराणिक सन्दर्भों से आगे बढ़ते हुए जब हम कुम्भ या महाकुम्भ मेले के सम्बन्ध में चर्चा करते हैं तो मन में कई प्रकार के प्रश्न उठते हैं। सबसे पहला प्रश्न तो यही उठता है कि इतने विशाल या अतिविशाल स्तर पर जब कुम्भ का प्रारम्भ हुआ तब एक विशेष क्षेत्र में अनेक मान्यताओं और धाराणाओं के लोगों को आकर सम्मिलित होने के कारण क्या रहे होंगे? हो सकता है, मैं जिस कारण को समझ रहा हूँ उससे कुछ अन्य कारण रहे हों, लेकिन एक कारण जो सबसे बड़ा समझ में आता है वह है, प्रकृति के साथ समाज के व्यवहार व नियोजन पर चिन्तन और उस चिन्तन के फलस्वरूप निकले सार तत्त्व के अनुसार जीवन, समाज, संस्कृति और शुभत्व का मानवता के कल्याण के लिए प्रचार–प्रसार। जिस कुम्भ प्रयाग में करोड़ों लोग स्नान करने पहुँच रहे हैं उसकी क्या केवल स्नान के लिए शुरुआत हुई होगी? कदापि नहीं । नदी में स्नान करना और मल–मूत्र बहाना तो सर्वथा वर्जित रहा है। प्रश्न यह भी है कि अरबों–खरबों खर्च करके क्या केवल स्नान के लिए इसका आयोजन किया जाता रहा है? नहीं। इस लिए जो लोग स्नान का मेला या महन्तगीरी का मेला मानते हैं वे भ्रम में हैं। कुम्भ में स्नान करके मोक्ष या स्वर्ग या मुक्ति की पौराणिक मान्यता या सन्दर्भों से एक नहीं कई अनर्थ हुए। प्रथम सबसे बड़ी हानि यह हुई कि लोग, विद्वान और सन्त, साधु या बाबा कुम्भ में सम्मिलित होने का कारण गंगा स्नान या त्रिवेणी में स्नान करके पुण्य, मोक्ष या मुक्ति पाना मानने लगे। इससे वे इसके उस मूल मन्तव्य को ही भूल गए कि यह ऐसा महोत्सव है जहाँ आकर श्रेष्ठ जीवन, धर्म, ज्ञान, दर्शन और विज्ञान का चिन्तन किया जाता है। इसी के साथ कई पौराणिक सन्दर्भ, मान्यताएँ, अन्धविश्वास और पाखण्ड भी प्रारम्भ हुए कि प्रयाग की त्रिवेणी या हरिद्वार में गंगा स्नान करके सारे पाप, अपराध और दुष्कर्म को धोया या क्षमा कराया जा सकता है या स्नान के द्वारा मोक्ष या स्वर्ग की सीढ़ी पर आसानी से चढ़ा जा सकता है।

यह जानना आवश्यक है कि जितने भी गूढ़ और जनोपयोगी सार्वदेशिक और सर्वोपयोगी चिन्तन आज तक हुए हैं, जिनसे धर्म, मानवता, अध्यात्म, विज्ञान और कल्याणकारी साहित्य का सृजन हुआ वे सभी ऋषि–महर्षियों ने नदियों के तट पर बैठकर ही किया। जिस प्रकार से नीर का स्वभाव निरन्तर बहना और ठंठा रहना है उसी प्रकार नदी के तट पर बैठकर किये गए सभी चिन्तनों में एक अहिर्निश प्रवाह दिखाई पड़ता है। इस लिए कुम्भ के आयोजन के इस मूल मन्तव्य को जानना आवश्यक है। समाज में जब समृद्धि आती है, तो वह **सदुपयोग और कल्याण का अनुशासन तोड़कर उपभोग का लालच भी साथ में लाती और वैमनस्य भी। ऐसे में आवश्यक हो जाता है कि समाज का मार्गदर्शन करने वाले जीवन–दार्शनिक चेता पुरुषों का सानिध्य प्राप्त हो। ऐसे में सुप्त पड़ी जीवन–शक्तियों को जागृत करने के लिए कुछ अन्तराल में सब को एकजुट होकर 'विमर्श' करना आवश्यक हो जाता है।** व्यक्ति, समाज, संस्कृति, अर्थ, धर्म और साहित्य की अनहितकारी धाराएँ इस विमर्श से रुक जाती हैं। कुम्भ का आयोजन इसके लिए ही है।

महर्षि दयानन्द ने हरिद्वार, प्रयाग और अन्य स्थानों पर लगने वाले कुम्भ के आयोजनों में कुम्भ के इसी मूल मन्तव्य को लोगों को समझाने के लिए अथक प्रयास किए थे। 12 जनवरी 1870(संवत् 1926) को महर्षि प्रयाग आए और कुम्भ के मेले में प्रवचन, शास्त्रार्थ और संवाद द्वारा जन–जन को वैदिक धर्म, वैदिक संस्कृति, वैदिक शिक्षा और अध्यात्म की युगान्तरकारी धारा का प्रहवन किया था। इसी समय का सन्दर्भ है कि महर्षि को घोर माघ के महीने में हड्डी तक को कंपा देने वाली रात में नागवासुकी के पास बैठकर तप करते देख किसी अंग्रेज ने पूछा था–आप को क्या ठंठ नहीं लगती है? तब महर्षि ने सत्य का अनुसरण करते हुए पूछा था–आप के मुंख को क्यों ठंठक नहीं लगती? अंग्रेज ने कहा –अभ्यास हो गया है। तब महर्षि ने दो टूट उत्तर दिया था–हमें भी अभ्यास हो गया है।'

महाकुम्भ : दशा और दिशा
(वैभव का प्रदर्शन नहीं, संचेतना के विस्तार की आवश्यकता)

भारत कृषि प्रधान देश है। कृषि संस्कृति और सभ्यता हमें विरासत में मिले हैं। इस लिए जितने भी नदी–उत्सव आयोजित होते हैं सभी में ग्राम देवता कृषक परिवार सहित सम्मिलित होते हैं। कृषि और नदी दोनों अनन्त समय से एक दूसरे से जुड़े रहे हैं। लेकिन जब से पौराणिक मान्यताओं के कारण ऐसे महान आयोजनों की दिशा भटकी तब से दोनों में वह सम्बन्ध ही नहीं रहा, जो होना चाहिए। यह इस बात से और भी स्पष्ट होता है कि कृषक नदी को किसी भी प्रकार से प्रदूषित करने को पाप या अपराध मानता रहा है। लेकिन जब से गंगा स्नान या नदी स्नान को मोक्ष या स्वर्ग प्राप्त करने का कारण मान लिया गया तब से स्थिति एकदम विपरीत हो गई। अब तो कृषक भी नदी को प्रदूषित करने में कोई पाप नहीं मानता है। इस लिए वेद–विदों को मानवीय, धार्मिक, आध्यात्मिक और सामाजिक सन्दर्भ को ठीक ढंग से समझाने की आवश्यकता है।

कुम्भ जैसे महोत्सवों में हमारे समाज और संस्कृति के पथ–प्रदर्शक ऋषियों ने जो यज्ञ किए उनका प्रतिफल लाखों वर्षों तक विश्व समाज को मिलता रहा। नदी को 'माँ' मानने की धारणा केवल भारत में ही है, इस लिए इसे कोई गन्दा करना पाप मानता रहा है, लेकिन एक समय ऐसा भी आया जब समाज के पथ–प्रदर्शकों ने अपनी जिम्मेदारी त्यागी और पौराणिक अन्धविश्वासी धारणाएँ और मान्यताएँ बढ़ती चली गईं। आज कुम्भ या महाकुम्भ के आयोजन तो होते हैं लेकिन उसकी न तो दशा ठीक है और न तो दिशा ही ठीक है। कुम्भ का रूप वैसे ही होता जा रहा है जैसे समाज और हमारी संस्कृति का। हम अपनी अवनति और पतन को ही प्रगति और विकास मान बैठे हैं। ठीक यही दशा और दिशा कुम्भ की भी है।

कुम्भ मेला क्षेत्र में पौराणिक सन्दर्भ में **कल्पवास** करने वाले को मोक्ष का अधिकारी कह गया है, लेकिन उस बात को भुला दिया गया है जिससे व्यक्तिगत, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, वैज्ञानिक और आध्यात्मिक उन्नति होती है। कल्पवास का मूल उद्देश्य ही अब लोग भूल गए हैं। आज कुम्भ तो है लेकिन सर्व–कल्याण वाले न तो कोई 'विमर्श' न तो कोई 'चिन्तन' न तो कोई मार्गदर्शन, न तो कोई विज्ञान–दर्शन कहीं दिखाई नहीं देता है। **कल्पवास का अर्थ ही होता है, एक निश्चित समय में किसी एक स्थान पर रहकर अपने शारीरिक, आत्मिक और सांस्कृतिक उन्नति के लिए 'स्व' को** परिमार्जित करना। स्पष्ट है, कुम्भ कभी इस प्रकार की सभी उन्नतियों का महोत्सव या पर्व हुआ करता था। जब सम्पूर्ण क्षेत्र में वैदिक धर्म, वैदिक अध्यात्म, वैदिक संस्कृति–सभ्यता और विज्ञान का बोलबाला था। लेकिन आज तो कुम्भ क्षेत्र में ऐसा कुछ भी देखने को नहीं मिलता है। यदि है भी तो दाल में नमक के बराबर । कुम्भ की वर्तमान दशा और दिशा बदलने की आवश्यकता है। तभी वास्तविक रूप में कुम्भ या महाकुम्भ का आयोजन सफल हो सकता है।

महाकुम्भ और आर्य समाज द्वारा वैदिक धर्म का प्रचार–प्रसार

कुम्भ में सारे देश के ही नहीं कमोवेश विश्व के कई देशों के श्रद्धालु घूमने और कुम्भ को जानने की इच्छा से आते हैं। वे जानना चाहते हैं कि इतना बड़े आयोजन का उद्देश्य क्या होता है? वे जानना चाहते हैं, कुम्भ में सम्मिलित होने के लिए इतनी बड़ी संख्या में लोग आते क्यों हैं? विदेशी श्रद्धालुओं को जो कुछ देखने और सुनने को मिलता है वह तो इसके मूल उद्देश्य से कहीं भी मेल नहीं खाता। इस लिए आवश्यकता इस बात की है कि कुम्भ के पुरातन मन्तव्य को स्थापित करने का प्रयास किया जाय। इससे पतन के मार्ग पर जा रहे विश्व समाज को सही दिशा मिल सकती है। और यह दिशा आर्य समाज के अतिरिक्त और कोई भी नहीं दे सकता है। आर्य समाज विशेषकर आर्य उपप्रतिनिधि सभा प्रयाग अपने उद्भव काल से ही प्रयाग में लगने वाले माघ मेले और कुम्भ तथा अर्ध कुम्भ मेले में वैदिक धर्म प्रचार–प्रसार शिविर का आयोजन करता आ रहा है। इस बार भी प्रयाग उपप्रतिनिधि सभा ने दो स्थानों पर शिविर का आयोजन किये हैं। साथ ही दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा और विचार टीवी ने संयुक्त रूप से प्रचार–प्रसार के लिए शिविर लगाए हैं। इससे निश्चित ही वैदिक धर्म, दर्शन, संस्कृति और अध्यात्म को जानने में लोगों को सहायता और दिशा मिलेगी। लेकिन जिस अति–वृहद स्तर पर पौराणिक महा मण्डलेश्वरों, शंकराचार्यों और अन्य पन्थियों के शिविर लगे हैं उसके मुकाबले में हमें और भी प्रयास करने होंगे। ज्ञातव्य है, पौराणिकता और अन्धविश्वास का यदि दर्शन करना हो तो इस समय प्रयाग कुम्भ से बड़ा स्थल नहीं मिलेगा।

आर्य समाज को इस कुम्भ में ही नहीं भविष्य में लगने वाले सभी कुम्भों में भी वृहद स्तर पर शिविर लगाने चाहिए और मीडिया के द्वारा अपनी बात को विश्व स्तर पर पहुंचाने के लिए कार्य–योजना बनानी चाहिए। ट्रेक्ट, साहित्य और चलचित्र के माध्यम से जिस प्रकार से **दिल्ली सभा और विचार टीवी इस वर्ष प्रचार कर रहें हैं, उसमें प्रत्येक आर्य महानुभाव को अपने सामर्थ्य के अनुसार सहयोग अवश्य देना चाहिए। तभी कुम्भ जैसे आयोजनों का हम मानवता और वैदिक धर्म के प्रचार–प्रसार के लिए बेहतर उपयोग कर सकते हैं।** –(09868235056)

शोभा यात्रा में हाथी, घोड़े, बग्घी और गाड़ियों के साथ सैकड़ों की संख्या में आर्य महानुभावों ने लिया भाग

लाला लाजपतराय का बहुआयामी व्यक्तित्व

जयंती : 28 जनवरी पर विशेष

लाला लाजपतराय भारतीय इतिहास के ऐसे बेजोड़ युग पुरुष हैं जिन्होंने भारतीय इतिहास को एक नया आयाम दिया। जिसके कृत्य से विदेशी भी भयभीत और संवेदित रहते थे। लालाजी के महान व्यक्तित्व पर जब हम दृष्टि डालते हैं तो लगता है जैसे वे कोई देवलोक के योद्धा हों। उनका व्यक्तित्व इतना विशाल, बहुआयामी और अद्वितीय था कि पूरा भारतीय इतिहास नत्मस्तक है। ऐसे महापुरुष के द्वारा देश, संस्कृति और समाज को दिए अवदानों को हम बार-बार स्मरण करके गर्व से भर उठते हैं। प्रस्तुत लेख उनके महान कृतित्व और व्यक्तित्व पर आधारित है। लाला जी की जयन्ती पर हम सभी श्रद्धा और प्रेम से उन्हें स्मरण करते

लाला लाजपतराय का व्यक्तित्व बहुआयामी था। वे एक साथ ही उत्कृष्ट वक्ता, श्रेष्ठ लेखक, सार्वजनिक कार्यकर्ता, सेवाभावी समाजसेवक, राजनैतिक नेता, शिक्षाशास्त्री, चिन्तक, विचारक तथा दार्शनिक थे। आर्य समाज से ही उन्होंने देश–सेवा का पाठ पढ़ा था और महर्षि दयानन्द से उन्होंने समर्पण तथा सेवा का आदर्श ग्रहण किया था। उनके शब्दों में –आर्य समाज मेरी माता तथा महर्षि दयानन्द मेरे धर्मपिता हैं। मैंने देश–सेवा का पाठ आर्य समाज से ही पढ़ा हैं। लालाजी के बलिदान के पश्चात् देशबंधु चित्तरंजनदास की पत्नी श्रीमती बसंतीदेवी ने एक वक्तव्य प्रसारित कर कहा था कि क्या देश में कोई ऐसा क्रांतिकारी युवक नहीं है जो भारतकेसरी लालाजी की मौत का बदला ले सके? जब यह बात सरदार भगतसिंह तक पहुँची तो उसने लालाजी पर लाठियों का प्रहार करने वाले साण्डर्स को मारकर उस अमर देशभक्त की मौत का बदला ले लिया। लाला लाजपतराय देश के स्वाधीनता संग्राम के महान् सेनानी थे। देशवासी उनके त्याग और बलिदान को सदा स्मरण रखेंगे।

शेष समाचार पृष्ठ 6 पर...

सार्वदेशिक सभा के प्रधान आचार्य बलदेव जी द्वारा हुआ वेद प्रचार वाहन का उद्घाटन

प्रयाग महाकुम्भ मेले में प्रेरक और संग्रहणीय चलचित्रों के माध्यम से बजाया जा रहा है वैदिक धर्म का डंका

विस्तृत समाचार पृष्ठ 6 पर...

पृष्ठ 5 का शेष लाला लाजपतराय का बहुआयामी ..

लाला लाजपतराय – लेखक और साहित्यकार के रूप में

लालाजी का अध्ययन विशाल था। धार्मिक, सामाजिक,राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय प्रश्नों पर उनका स्पष्ट चिन्तन था। उनका लेखन विशद,विविध विषयों से सम्पृक्त था बहुआयामी था, जिसका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है–

जीवनी–लेखन : स्वदेशी और अन्य देशीय महापुरुषों के जीवन–चरित्र–लेखन का उनका कार्य अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इटली के विख्यात देशभक्त मैजिनी और गैरीबाल्डी का जीवनी–लेखन तो विदेशी शासकों की दृष्टि में इतना आपत्तिजनक समझा गया कि इन दोनों पुस्तकों की जब्ती के आदेश प्रसारित किए गए। उनके द्वारा निम्न जीवन–चरित्र लिखे गए–

1. लाइफ एण्ड वर्क ऑफ पं. गुरुदत्त विद्यार्थी एम.ए. – इस ग्रन्थ का प्रकाशन 1891 में पं. गुरुदत्त के निधन के एक वर्ष पश्चात हुआ। यह लालाजी की प्रथम कृति है जिसे उन्होंने अपने मित्र तथा सहपाठी पं. गुरुदत्त के संस्मरणों के आधार पर लिखा था। विरजानन्द प्रेस,लाहौर से प्रकाशित यह ग्रन्थ प्रायः दुर्लभ हो चुका है। इसका उर्दू संस्करण 1992 में छपा था।

2. महर्षि दयानन्द सरस्वती और उनका काम – महर्षि दयानन्द का यह उर्दू जीवन–चरित्र लालाजी ने 1898 में लिखा। इसका हिन्दी अनुवाद गोपालदास देवगण शर्मा ने किया जो 1898 में ही दुनिया के महापुरुषों की जीवन–ग्रन्थमाला' के अन्तर्गत छपा। 2024 वि. में सार्वदेशिक पत्र ने इसे अपने विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया।

3. **योगिराज महात्मा श्रीकृष्ण का जीवन चरित्र** – उर्दू में इसका प्रकाशन 1900 में लाहौर से हुआ। इसका हिन्दी अनुवाद मास्टर हरिद्वारीसिंह बेदिल (गुरुकुल महाविद्यालय,ज्वालापुर में अध्यापक) ने किया, जिसे पं. शंकरदत्त शर्मा ने वैदिक पुस्तकालय, मुरादाबाद से प्रकाशित किया।

4. **शिवाजी महाराज का जीवन चरित्र** – 1896 में उर्दू में प्रकाशित।

5. **महात्मा ग्वीसेप मैजिनी का जीवन–चरित्र** – यह भी मूलतः उर्दू में लिखा गया और 1896 में प्रकाशित हुआ। ब्रिटिश शासन ने इसे जब्त कर लिया। इसका हिन्दी अनुवाद श्री केशवप्रसाद सिंह ने किया जिसके कई संस्करण छपे। नेशनल बुक ट्रस्ट ने इसे 1967 में पुनः प्रकाशित किया।

6. **गैरीबाल्डी** – उर्दू में यह जीवन–चरित्र लिखा गया था। इसे भी अंग्रेजों ने प्रतिबन्धित कर दिया था। देश के स्वतन्त्र हो जाने के पश्चात् नेशनल बुक ट्रस्ट ने इसे 1967 में पुनः प्रकाशित किया।

7. सम्राट् अशोक – मूल ग्रन्थ उर्दू में था। इसका हिन्दी अनुवाद चौधरी एण्ड संस, बनारस ने 1933 में प्रकाशित किया।

शेष अगले अंक में ...

पृष्ठ एक का शेष महाकुम्भ प्रयाग में हुआ ....

प्राचीन भारतीय सांस्कृतिक विरासत के प्रतीक महाकुम्भ प्रयाग उन अद्वितीय पर्वो, महोत्सवों और मेलों में है जिसका इतिहास अत्यन्त पुराना है। मानव समाज के अनगिनत समुदायों, वर्गो, सम्प्रदायों और विचारों के मानने वाले लोग अपनी मान्यता और धारणा के अनुसार यहाँ आते हैं और कुम्भ की अद्वितीयता और विचित्रता में सम्मिलित होकर अपने गन्तव्य लौट जाते हैं। इस वर्ष प्रयाग(इलाहाबाद) में 14 जनवरी मकर संक्रान्ति से माघ पूर्णिमा तक कुम्भ का मेला लगा हुआ है। करोड़ों आमजन ही नहीं लाखों की संख्या में साधु, संन्यासी, बाबा, महन्त, मण्डलेश्वर और पौराणिक तथा अन्य विचार धाराओं के प्रचारक–प्रसारक पहुँच चुके हैं और पहुँचने वाले हैं। इसी के मध्य 25 जनवरी को वैदिक धर्म के पथानुगामियों की भव्य शोभा यात्रा निकाली गई। जहाँ घंटों 'वेदों का डंका आलम में..., 'दयानन्द के वीर सैनिक बनेंगे.., 'वैदिक धर्म की जय और आर्य समाज अमर रहे' जैसे गीतों व नारों से आकाश गुंजायमान होता रहा। विश्व के सबसे बड़े इस पौराणिक महोत्सव में प्रत्येक कुम्भ या महाकुम्भ की तरह इस बार भी आर्य उपप्रतिनिधि सभा प्रयाग ने महकुम्भ मेले में दो स्थानों सेक्टर 9, प्लाट संख्या 66, पश्चिम पटरी मुक्ति मार्ग और सेक्टर 14 अरैल क्षेत्र, संकट मोचन वल्लभाचार्य मार्ग पर वैदिक धर्म का डंका बजाने और आर्य समाज आन्दोलन को आगे बढ़ाने का संकल्प लेकर शिविर लगाए हैं। आर्य उप प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में सेक्टर 9 स्थित शिविर से 25 जनवरी को भव्य शोभा यात्रा का आयोजन किया गया। जिसमें प्रयाग क्षेत्र की सभी आर्यसमाजों के आर्य महानुभाव परिवार सहित, आर्य शिक्षण संस्थाओं के बच्चे, अनेक आर्य संन्यासी और प्रयाग के वरिष्ठ आर्य समाज सेवकों व विद्वानों ने भाग लिया। शोभा यात्रा में जहाँ हाथियों पर अनेक आर्य विरक्त सवार थे वहीं पर घोड़ों और बग्घियों पर आर्य वीरांगनाएँ सवार थीं। मोटर कार, टैक्टर और अन्य वाहनों पर बड़ी संख्या में आर्य महानुभाव अपने परिवार के साथ शोभायात्रा की शोभा बढ़ा रहे थे। शोभायात्रा का नेतृत्व आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली के प्रधान महाशय धर्मपालजी, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान आचार्य बलदेवजी, वयोवृद्ध आर्य समाजसेवक और विद्वान महाशय जागेश्वर आर्यजी, उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री देवेन्द्रपाल वर्मा, उपप्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री हीरालाल आर्यजी व दिल्ली सभा के ब्र. राजसिंहजी आर्य ने किया। इस विशेष अवसर पर शोभायात्रा में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री सर्वश्री विनय आर्य, आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका के प्रधान डॉ रमेश गुप्तजी, चकोस्लाविया के आर्य विद्वान श्री कमलानन्दजी, आर्य विद्वान पं. देवराजजी, पं.हरिश्चन्द्र आर्यजी, माता गीतादेवी, श्रीमती ऊषा वर्माजी, श्रीमती सन्ध्या वर्मा, शिविर के संयोजक और आर्य उपप्रतिनिधि सभा के मन्त्री पं. सन्तोष शास्त्रीजी, कोषाध्यक्ष गोपाल बरनवालजी, वरिष्ठ समाजसेवी गौरी शंकर श्रीवास्तवजी, आर्य विद्वान पं. मदनमोहन दिव्यजी, आर्य विद्वान पं. राधेमोहनजी, आर्य समाज चिरौड़ा के प्रधान राजेन्द्र कुमारजी, मन्त्री रमेशसिंह आर्यजी, वरिष्ठ अधिवक्ता शेखर सक्सेनाजी,त्रिवेणी प्रसादजी, श्रीराम पटेल, प्रमोद आर्यजी, बिहारी लाल केशरीजी, विजय बहादुर सिंहजी, आचार्य अशर्फीलाल शास्त्रीजी, हर्षवर्धन सिंहजी व राजेन्द्र कपूरजी सहित बड़ी संख्या में आर्य महानुभाव, आर्य महिलाएँ, आर्य वीरदल और आर्य वीरंगना दल के आर्य वीर और आर्य वीरांगनाएँ अपने गणवेश में उपस्थित थे।

शोभा यात्रा से जहाँ वैदिक धर्म व आर्य समाज का प्रचार हुआ वहीं पर हजारों लोगों ने बहुत ही कौतुहल के साथ शोभायात्रा और उसमें वितरित साहित्य का लाभ उठाया।–**राजेन्द्र कपूर, मुण्डेरा इलाहाबाद**

पृष्ठ 5 का शेष वैदिक धर्म प्रचार और चलचित्र ....

प्रयाग में चल रहे महाकुम्भ मेले में जहाँ पौराणिक धर्माचार्यो, अखाड़ों, अनेक हिन्दू धर्म के सम्प्रदायों के शिविर लगे है वहीं पर इन सबसे अलग कुम्भ मेले के सेक्टर 14 अरैल रोड स्थित एक अलग प्रकार का ऐसा भी शिविर है जहाँ चलचित्रों के माध्यम से वैदिक धर्म, मानवीय मूल्यों, सामाजिक व पारिवारिक मूल्यों और राष्ट्रीय सद्भावनाओं से ओतप्रोत चलचित्र(फिल्में) दिखाई जा रही हैं। यह शिविर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, मुम्बई स्थित 'वयम् वैल्यू एजूकेशन फाउंडेशन अर्थात् विचार टीवी के माध्यम से दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के सहयोग से लगाई गया है। इस **नैतिक चलचित्रोत्सव शिविर का उद्घाटन 12 जनवरी 2013 को प्रसिद्ध अभिनेता श्री मुकेश खन्ना द्वारा किया गया।** इस अवसर पर 'वयम' के निदेशक श्री पीयूष आर्य और उमेश भारद्वाज सहित अनेक गणमान्य आर्य महानुभाव उपस्थित थे। इसी अवसर पर महान स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी चन्द्रशेखर आजाद पर निर्मित फिल्म का विमोचन श्री विवेक आर्य, दीप्ती भारद्वाज और दीप अन्जुम की उपस्थिति में किया गया। ज्ञातव्य है, 'वयम फाउन्डेशन' एक ऐसी सामाजिक संस्था है जिसका उद्देश्य समाज में वैदिक नैतिक मूल्यों, सामाजिक मूल्यों एवं आदर्शो, राष्ट्रीय कर्तव्यों और मूल्यों के प्रति बच्चों एवं किशोरवय को एक आदर्श जीवन, परिवार और समाज की ओर प्रेरित करना है। लगभग 700 स्कूलों में इस संस्था के माध्यम से नैतिक शिक्षा का कार्यक्रम देश के अनेक भागों में चलाया जा रहा है। संस्था का लक्ष्य आने वाले समय में देशभर के 6 हजार विद्यालयों में नैतिक शिक्षा के कार्यक्रमों को लागू करना है। मेले में दो थियेटर्स हैं। पहले थियेटर का उद्घाटन जहां अभिनेता मुकेश खन्ना ने किया वहीं पर दूसरे थियेटर का उद्घाटन 25 जनवरी को सार्वदेशिक सभा के प्रधान आचार्य बलदेवजी के आशीर्वाद तथा आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के प्रधान और उद्योगपति महाशय धर्मपालजी के करकमलों द्वारा भव्यता के मध्य सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर अपना आशीर्वाद देते हुए आचार्य बलदेवजी ने लोगों को वैदिक संस्कृति एवं संस्कारों की ओर लौटने का आह्वान किया। महाशय धर्मपालजी ने कहा, ऐसे कार्यक्रम हमारे लिए बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। इससे बच्चों को वैदिक मूल्यों के प्रति आकर्षण उत्पन्न होगा। इस अवसर पर दिल्ली सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य, पीयूष आर्य, सुरेश अग्रवाल जी व उमेश भारद्वाज जी विशेष रूप से उपस्थित थे।

इस अवसर पर 'वयम्' द्वारा राष्ट्रप्रेम को समर्पित क्रान्ति उत्सव का आयोजन 26 जनवरी को किया गया, जिसका उद्घाटन जे बी एम ग्रूप तथा 'वयम' के चेयरमैन श्री सुरेन्द्र आर्य ने किया। इस अवसर पर अपना उद्बोधन देते हुए उन्होंने नैतिक मूल्यों व राष्ट्रीय–प्रेम को आज के समाज की आवश्यकता बताया।

चलचित्र प्रचार शिविर में ही विभिन्न स्थानों पर अस्थायी थियेटरों के बाहर आकर्षण का एक और केन्द्र है–समाज में गिरती हुई नैतिकता की समस्या एवं उसके उपायों पर प्रदर्शनी, जिसे दर्शकों की सराहना और सन्देश अनवरत मिल रहे हैं। स्पष्ट है, प्रयाग के इस महाकुम्भ में चलचित्रों के माध्यम से नैतिक मूल्यों का प्रचार–प्रसार का उद्देश्य निरन्तर पूरा करने के पथ पर है। इस चलचित्रोत्सव का समापन 10 मार्च2013 को होगा। इस प्रकार कहा जा सकता है कि आर्य समाज द्वारा वैदिक धर्म प्रचार–प्रसार का यह महत्त्वपूर्ण भाग है, जिसे 'वयम्' बहुत जीवन्तता के साथ पूर्ण करने में लगा है।

शोक समाचार

आचार्य कीज्हानेल्लूर परमेश्वरन नाम्बूतिरी का निधन

आर्य जगत् के वरिष्ठ विद्वान और गुरुदत्त भवन आर्य गुरुकुल के पूर्व आचार्य श्री कीज्हानेल्लूर परमेश्वरन नाम्बूतिरी का 92 वर्ष की आयु में 24 जनवरी 2013 को निधन हो गया। आप का जन्म 1921 की मालाबार विद्रोह की कुछ महीने पूर्व केरल के पालाक्काड जिले में हुआ। पढ़ने में रुचि होने के कारण उपनयन संस्कार के उपरान्त आर्य समाज में प्रवेश किया। उसके उपरान्त लाहौर (विभाजित पाकिस्तान) के गुरुदत्त भवन गुरुकुल में प्रवेश किया। स्नातक होने के उपरान्त उसी गुरुकुल के आचार्य पद को सुशोभित किया। 1946 के भारत विभाजन वेला में हुए भीषण दंगों में इस गुरुकुल को विद्रोहियों ने आग लगा दिया। गुरुकुल के जलते हुए कुछ पुस्तकें जो आपके हाथ में लगीं, उसे लेकर सत्साहस दिखाते हुए कराची के रास्ते मुम्बई होते हुए केरल पहुँच गए।

केरल में वेद प्रचार के साथ विद्यालयों में हिन्दी के अध्यापक भी रहे। पं. रघुनन्दन शर्मा कृत 'वैदिक सम्पत्ति' का भी नाम्बूतिरी ने मलयालम भाषा में भाषान्तरण (अनुवाद) किया। इसके अतिरिक्त महर्षि कृत यजुर्वेद भाष्य और (भाषान्तरण) ऋग्वेद के कुछ सूक्त, सामवेद भाष्य पूर्ण और अथर्ववेद के कुछ काण्ड मलयालम में भाषान्तरण किया। मलयालम के अतिरिक्त संस्कृत, हिन्दी, मराठी, गुजराती, पाली, अंग्रेजी, पुस्तो व बलूची इत्यादि भाषाओं के वे विद्वान थे। केरल में आर्य समाज के प्रचार–प्रसार में अग्रणी लोगों में आप का नाम बहुत आदर के साथ लिया जाता था।

विशेष :**आर्य समाज में ऐसे निःस्पृहणीय वेदज्ञ और साहित्यकार को जीवित रहते सम्मान न मिला हो लेकिन आर्य समाज वेल्लिनेज्ही उनके वैदिक साहित्य को प्रकाशित करने का संकल्प लिया है, जो दानदाता आर्य महानुभाव इस महान कार्य में अपना योगदान (दान) दे सकते हैं वे आर्य समाजम् पण्डित लेख राम स्मृति भवन, पो. वेल्लिनेज्ही केरल–679504 या aryasamajvellinezi@gmail.com पर सम्पर्क करें।**

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करें। -सम्पादक

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 40 रु.	प्रचारार्थ 25 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

कार्यक्रम सम्पन्न

छात्रा की आत्मा की लिये किया शान्ति यज्ञ

16 दिसम्बर दिल्ली में सामूहिक दुष्कर्म पीड़ित छात्रा की मृत्यु पर आर्य समाज कोटा ने छात्रा की आत्मा की शान्ति के लिए ब्राइटलैण्ड स्कूल गायत्री विहार, कोटा में शान्ति यज्ञ का आयोजन किया।

आर्य समाज गायत्री विहार कोटा के प्रधान अरविन्द पाण्डेय ने कहा कि छात्रा का बलिदान व्यर्थ नहीं जाएगा, इस बलिदान से देश जाग चुका है, इस बलिदान से कड़े कानून बनेंगे तथा जिससे अपराधी प्रवृत्ति पैदा न हों।

डा.मंजु मेहता ने कहा कि महिलाओं को अपनी सुरक्षा स्वयं करनी पड़ेगी। आज भ्रष्टाचार के साथ दुराचार भी बढ़ रहा है।

इस अवसर पर आर्यसमाज रामपूरा, तलवंडी, विज्ञाननगर,भीमगंज मण्डी व गायत्री विहार के अधिकारी और सदस्य उपस्थित थे। – ***अरविन्द पाण्डेय, प्रचारमन्त्री***

महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव (7 मार्च) पर शुभकामना विज्ञापन

महर्षि दयानन्द के जन्मोत्सव पर इस वर्ष 10 से अधिक अखबारों में विज्ञापन दिए जाएंगे। ज्ञातव्य है, गत वर्ष भी इसी प्रकार से विज्ञापन दिए गए थे, जिससे करोड़ों लोगों के पास महर्षि के अवदान और जीवन दर्शन की प्रेरणा पहुँची। इन विज्ञापनों से जन मानस में महर्षि, आर्य समाज और वेद के प्रति जहाँ जिज्ञासा उत्पन्न होती है वहीं पर श्रद्धा भी पैदा होती है। आर्य महानुभाव, आर्यसमाजें, आर्य शिक्षण संस्थाएँ और अन्य आर्य समाज से सम्बन्धित संस्थाएँ इसमें भाग लेकर अपनी पुण्य आहुति सकते हैं। विज्ञापन की दर 1500/– रु0 एवं फोटो सहित 3000/– रु0 प्रति व्यक्ति/संस्था है। इसके लिए चेक **'आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य'** के नाम **15 हनुमान रोड, नई दिल्ली–1** को भेजा जाना चाहिए। अधिक जानकारी के लिए उपमन्त्री **श्री सतीश चड्ढा जी** (09540041414) से सम्पर्क करें।

निवेदक

महाशय धर्मपाल प्रधान | **सुरेन्द्र रैली** वरिष्ठ उपप्रधान | **राजीव आर्य** मन्त्री

धनखड़ खाप हरियाणा के अध्यक्ष का विवादित बयान

हरियाणा की अनेक खापों में धनखड़ खाप, जो जाटों से सम्बन्धित है के अध्यक्ष श्री ओमप्रकाश धनखड़ ने झज्जर की बैठक में आर्य समाज से सम्बन्धित एक बहुत ही दुर्भाग्य पूर्ण एवं अज्ञानतापूर्ण बयान जारी किया जो प्रसिद्ध अंग्रेजी पत्र हिन्दुस्तान टाइम्स के 21 जनवरी2013 के पृष्ठ संख्या 10 पर प्रकाशित हुआ है। इस समाचार के अनुसार खाप के अध्यक्ष श्री ओमप्रकाश धनखड़ ने माँग की है कि आर्य समाज मन्दिरों को बन्द कर देना चाहिए, क्योंकि वे अपने यहाँ अन्तर्जातीय और प्रेम विवाह करवाते हैं । यह नहीं होना चाहिए, क्योंकि मन्दिर एक धार्मिक स्थल हैं।

श्री ओमप्रकाश धनखड़ के इस दुर्भाग्यपूर्ण और अज्ञानतापूर्ण बयान का आर्य समाज की शिरोमणि संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा निरस्त करती है और उनके इस निराधार माँग की निन्दा करती है।

श्री धनखड़ को यह भी ज्ञान नहीं है कि सिक्खों का विवाह उनका मन्दिर गुरुद्वारा, पौराणिकों के विवाह पौराणिक मन्दिर में और ईसाइयों के विवाह गिरजाघर में सम्पन्न किए जाते हैं। श्री धनखड़ के अज्ञानता पूर्ण सोच के अनुसार तो ये सभी धार्मिक स्थल बन्द होने चाहिए। आर्य समाज यह मानता है कि श्री धनखड़ जैसे सोच वाले व्यक्ति स्वस्थ्य भारतीय समाज के लिए अभिशाप हैं। ऐसे लोगों पर प्रतिबन्ध लगाया जाना चाहिए।

विशेष सूचना आगामी आयोजित कार्यक्रम

सभी आयोजनों में अधिकाधिक संख्या में पधार कर कार्यक्रम सफल बनाएँ

महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव (ऋषि पर्व)

तिथि : गुरुवार, 7 मार्च 2013

आयोजक : दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

होली के पावन अवसर पर होली मिलन मंगल समारोह का भव्य आयोजन

तिथि : रविवार, 24 मार्च 2013

आयोजक : दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

ज्योति–पर्व (ऋषि बोधोत्सव)

तिथि : रविवार, 10 मार्च 2013

आयोजक : आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली प्रदेश

महाशय धर्मपाल जी के 90 वें जन्मदिवस के अवसर पर अमृत महोत्सव का भव्य आयोजन

तिथि : मंगलवार, 26 मार्च 2013

आयोजक : दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

साप्ताहिक आर्य सन्देश

28 जनवरी, 2013 से 03 फरवरी, 2013

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2012–13–14

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 31 जनवरी / 01 फरवरी –2013

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2012–14

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 30 जनवरी, 2013

आर्यसमाज गोविन्दपुरी,नई दिल्ली के तत्वावधान में

महर्षि दयानन्द जनकल्याण ट्रस्ट कीर्ति नगर के सहयोग से

निशुल्क स्वास्थ्य जॉच शिविर

स्थान : आर्य समाज गोविन्दपुरी, नईदिल्ली

तिथि : रविवार, 17 फरवरी 2013 को प्रात: 9 बजे से 1 बजे तक

बवासीर (Piles) बिना ऑपरेशन के जर्मन पद्धति रोग द्वारा, आँखों का ऑपरेशन, दूर और नजदीक का चश्मा, पोलियो से विक्लांग आदि रोग की जॉच की जाएगी। इन समस्यों से ग्रस्त महानुभाव शिविर में आकर इसका लाभ उठायें।

सम्पर्क सूत्र :

सतीश चड्ढा (9540050322) ओमप्रकाश आर्य (9540077858)

प्रतिष्ठा में,

श्री.....

आर्य सन्देश को निम्न वेबसाईट पर प्राप्त करें

www.thearyasamaj.org

आर्य समाज की अन्य पत्र–पत्रिकाओं को इस वेबसाईट पर देखा जा सकता – *सम्पादक*

आर्य उप प्रतिनिधि सभा

प्रयाग के तत्वावधान में

कुम्भ में वैदिक धर्म प्रचार शिविर

साहित्य, धर्म व संस्कृति की त्रिवेणी कहे जाने वाले तीर्थराज प्रयाग में लगने वाले महाकुम्भ 2013 के शुभ अवसर पर आर्य उपप्रतिनिधि सभा प्रयाग के तत्वावधान में वैदिक धर्म के प्रचार–प्रसार हेतु शिविर का आयोजन किया गया है। जो आर्यजन कुम्भ मेले में भ्रमणार्थ जाना चाहते हैं वे प्रचार शिविर के स्थान कुम्भ मेले के सेक्टर संख्या.9, प्लाट संख्या 66, पश्चिम पटरी, मुक्तिमार्ग एवं सै. 14, अरैल क्षेत्र, संकट मोचन, वल्लभाचार्य मार्ग, मोबाईल टावर के पीछे पहुँचकर लाभ अर्जित कर सकते हैं। पहुँचने के पूर्व पंजीकरण कराना अनिवार्य है। मेले की तिथि 13 जनवरी से 25 फरवरी 2013 है। **प्रचार-प्रसार के लिये कार्यकर्ता अपना अधिकाधिक समय दें, जिससे प्रचार का लक्ष्य पूरा हो सके** *सम्पर्क करें – सन्तोष कुमार शास्त्री, 9919020017, आर्यसमाज कृष्णनगर, कीडगंज, जिला – इलाहाबाद (उ.प्र.)* ***E-mail : rajok51@rediffmail.com website : .www.vedic-concepts.com***

ब्रेल लिपि में

महर्षि दयानन्द जीवनी

मात्र 1000/–रु.

आर्यजन अपनी आर्य समाज की ओर से अंध विद्यालयों को भेंट दें।

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र0 राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए सार्वदेशिक प्रेस, 1488 पटौदी हाऊस, दरियागंज, नई दिल्ली–2 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली–1; फोन : 23360150; टैलीफैक्स 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।

सम्पादक : ब्र0 राजसिंह आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : सुशील महाजन सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर